M. A. Semester - III

Phill. CC - II

Western Analytical Philosophy

Unit-1 - L. Wittgenstein

(Language Game)

Tractatus का एक मूल विचार है 'क्या कहा जा सकता है' तथा 'क्या केवल दिखाया जा सकता' — उसका भेद। Tractatus का कहना है जिसके विषय में हम कुछ कह नहीं सकते उसके विषय में 'मौन' ही वांछनीय है, किन्तु उसे दिखाया जा सकता है — प्रदर्शित किया जा सकता है।

Tractatus में स्पष्ट किया गया है कि तर्कवाक्य अपने Logical Form के विषय में कुछ नहीं कह सकते, किन्तु उसे प्रदर्शित (showing) कर देते हैं। तर्कवाक्यों के चित्रण-सिद्धान्त में यह स्पष्ट किया गया है कि तर्कवाक्य तथ्यों को चित्रित करते हैं, अर्थात भाषा का विशेष सम्बन्ध तथ्यात्मक जगत से है — यह दिखाया गया है; किन्तु वस्तुतः यह संबंध है क्या — यह भाषा नहीं कह सकती। इसीलिए जगत या जगत की संरचना का कोई विवरण सम्भव नहीं है।

यद्यपि भाषा में कुछ तथ्यों कहा जा सकता है, पर उस भाषा में कुछ ऐसे लक्षण हैं जिनके आधार पर भाषा कुछ कह पाती है। किन्तु भाषा अपने नाजीव लक्षणों के विषय में यह नहीं कह सकती कि इन भाषा के ये विशेष लक्षण हैं। यही भाषा की एक सीमा है — इसीलिए 'जो कहा जा सकता है' — का क्षेत्र बहुत ही सीमित है।

भाषा बोध्य-युक्त तर्कवाक्यों की सम्पूर्णता है — तथा इससे यह पता चलता है कि जगत के विषय में क्या कथनीय है। भाषा की यह सीमा स्पष्ट रूप से जगत की सीमा है — यह सीमा झलक जाती है; इसके

विषय में
44

हम कुछ कह नहीं सकते। यहाँ witt. कहते हैं कि भाषा का यह विचार एक प्रकार से अहममात्रवादिता (solipsism) तक पहुँचा देता है। यदि हमारी भाषा की सीमा कथनीय की सीमा है, और यदि कथनीय की सीमाएं जगत की सीमा है, तो भाषा की सीमा जगत की सीमा है। विषय में जो अर्थपूर्ण ढंग से सोचा जा सकता है, उसकी सीमाएँ हैं, तो 'भाषा की सीमा जगत की सीमा है', हमारी भाषा हमारे विचार की सीमाएँ है, अतः 'हमारी भाषा हमारे जगत की सीमा है'।

5.6 – The limits of my language are the limits of my world.

4.001 – The totality of proposition is language.

पूर्व में अहमवाद दो रूपों – subjective Idealism तथा objective Idealism – में मान्य रहा। लेकिन, यहाँ witt. कहते हैं, अहमवाद क्या है? वह कहता है कि जिस रूप में अहमवाद है, उस रूप में स्वीकृति हो तो दोष नहीं है – उसे सिर्फ दिखाया जा सकता है। वस्तुतः अहंमात्रवाद का जो अर्थ है, बिलकुल सही है, केवल उसे कहा नहीं जा सकता, वरन् वह स्वयं को प्रदर्शित करता है।

5.62(2) – For what the solipsist means is quite correct; only it cannot be said, but makes itself manifest.

स्वाहंमवाद की व्याख्या को प्रस्तुत करते हुए witt कहते रहे हैं, जगत मेरा ही जगत है। यह तथ्यों में स्पष्ट है, जो भाषा की सीमाएँ है, आशय है कि जिस भाषा को मैं समझ सकता हूं उस भाषा की सीमा ही मेरे जगत की सीमाएं है।

भाषा की सीमाओं का अर्थ है मेरे जगत की सीमाएँ।

5.62(3) - The world is my world: this is manifest in the fact that the limits of language (of that language which alone I understand) means the limits of my world.

सर्वाहमवाद में 'thinking subject' तथा 'substance' पर विचार किया जाता है। तत्वमीमांसक यह दावा करते हैं कि वे चिन्तन एवं भाषा की सीमाओं का अतिक्रमण कर जाते हैं, जिनके विषय में भाषीय सीमाओं के कारण कुछ कहा ही नहीं जा सकता। तत्वमीमांसक उसी के विषय में भाषीय उक्तियाँ देते जाते हैं कि आत्मा है, इत्यादि। लेकिन, W.H. यहाँ कहता है कि सर्वाहमवाद metaphysical self के रूप में उपयुक्त नहीं, यह सिर्फ अनुभव के रूप में ही ठीक है। फिर, आत्मा कोई वस्तु भी नहीं है। — विचारशील, प्रस्तुतकर्ता ज्ञाता जैसा कुछ नहीं होता।

5.631(1) — There is no such thing as the subject that thinks or entertains ideas. एक Note Book में भी W.H. कहते हैं कि 'I' कोई वस्तु नहीं है — 7.8.'16।

मूर ने भी 'I think' ना कहकर 'it thinks' कहा है। वे भी कहते हैं कि आत्मा कोई वस्तु नहीं है, क्योंकि वह किसी भी स्थिति में observable नहीं है, अतः आत्मा observable object नहीं है।

W.H. स्वयं भी सवाल करता है कि सत्ता में metaphysical self कहाँ मिलता है? visual field में क्या द्रष्टा को देखा जा सकता है? फिर, जिस तरह visual field में आँख को नहीं देखा जा सकता, ठीक

4.

metaphysical self या 'I' को नहीं वैसे ही जगत में metaphysical self या 'I' को नहीं ग्रहण किया जा सकता है। — जगत में पराभौतिक ज्ञाता कहाँ देखा जा सकता है? तुम कहते हो कि यहाँ बात ठीक वैसी ही है जैसी आँख और दृष्टिक्षेत्र के साथ, किन्तु वस्तुतः तुम आँख को नहीं देखते।

5.633 — Where in the world is a metaphysical subject to be found? You will say that this is exactly like the case of the eye and visual field. But really you do not see the eye.

— और दृष्टिक्षेत्र में ऐसा कुछ भी नहीं जिससे यह निष्कर्ष निकाले कि वह आँख से देखा गया है। And nothing in the visual field ~~allowing~~ allows you to enter that it is seen by an eye.

5.6331 — For the form of the visual field is surely not like this

आँख Eye —

अर्थात् दृष्टिक्षेत्र का आकार इस तरह का नहीं है:

इस तरह जब metaphysical self को ग्रहण किया ही नहीं जा सकता, वह ग्रहणीय है ही नहीं; अतः उसपर विचार नहीं करना चाहिए।

इसी तरह Hume तथा Kant ने भी metaphysical self का खण्डन किया था। Kant ने — बौद्धिक ब्रह्माण्डविज्ञान, बौद्धिक मनोविज्ञान तथा बौद्धिक ईश्वरवाद के खण्डन के आधार पर metaphysical self का खण्डन किया था। लेकिन, Witt. शोपेनहावर की पुस्तक 'The World and Will and Ideas' से ज्यादा प्रभावित था। शोपेनहावर ने कहा कि 'The world is our idea' लेकिन, Witt. यह नहीं मानता कि जगत 'Idea' है, यद्यपि कि metaphysical self का खण्डन हेतु